''प्रशंसा में ईमानदारी, निष्पक्षता और सच्चाई ज़रूरी''

ब.कु.रामसिंह, रेवाड़ी (हरियाणा)

दीर्घकाल तक राज्य करने के उपरांत महाराजा ययाति ने पुत्र को राज्य सौंप दिया और स्वयं जंगलों में जाकर तप करने लगे। कठोर तप के फलस्वरूप वे स्वर्ग में पहुंचे। वह कभी देवताओं के साथ स्वर्ग में रहते, कभी ब्रह्मलोक पहुंच जाते। उनका इतना मान था कि अन्य सभी उनसे ईर्ष्या करने लगे। वे इंद्र की सभा में जाते तो उनके तप के कारण, इंद्र उन्हें अपने से नीचे के आसन पर नहीं बैठा सकते थे। इंद्र को उन्हें अपने ही आसन पर बिठाना पड़ता था। लेकिन यह बात इंद्र को भी अप्रिय लगती थी। कहा जाता है कि देवता भी मृत्युलोक के किसी जीव के इंद्रासन पर बैठने को स्वीकार नहीं कर पाते थे। इंद्र देवताओं की भावनाओं से परिचित थे। एक दिन इंद्र ने ययाति से कहा- आपका पुण्य दोनों लोकों में विख्यात है। आपकी समानता भला कौन कर सकता है? मुझे यह जानने की इच्छा है कि आपने कौन-सा तप किया, जिसके प्रभाव से ब्रह्मलोक में जाकर इच्छा अनुसार जाकर रह सकते हैं?

अपनी प्रशंसा सुनकर ययाति, इंद्र की वाणीजाल में आ गए उन्होंने कहा- हे इंद्र देवता, मनुष्य, गंधर्व और ऋषियों में कोई ऐसा नहीं है, जो मेरे समान तपस्वी हो। बस फिर क्या था, इंद्र का स्वर कठोर हो गया। इंद्र ने कहा- ययाति तत्काल मेरे आसन से उठ जाओ। अपनी प्रशंसा अपने ही मुख से कर, तुमने अपने ही सारे पुण्य समाप्त कर लिए हैं। तुमने यह जाने बिगर कि देवता, मनुष्य, गंधर्व और ऋषियों ने क्या तप किए, उनसे तुलना की और उनका तिरस्कार भी कर दिया! अब तुम स्वर्ग से गिरोगे। आत्म-प्रशंसा ने ययाति के तप का फल समाप्त कर दिया और वे स्वर्ग से गिरा दिए गए।

इसलिए कहा गया है कि व्यक्ति को आत्म-प्रशंसा से दूर रहना चाहिए। स्वयं

अपनी प्रशंसा करेंगे तो पुण्य का तो क्षय होगा ही, पतन भी हो जाएगा। स्व-प्रशंसा से लोगों के मन में हमारी छवि अच्छी नहीं बनती। जबकि ज्यादा प्रशंसा करने वाला व्यक्ति स्वयं को उपहास का पात्र बना लेता है। यदि समय रहते इस आदत पर नियंत्रण नहीं रखा गया, तो यह हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाता है। जिस दिन स्व-प्रशंसा और पर-निंदा से हम ऊपर उठ जाते हैं, उस दिन हम देवत्व को प्राप्त कर लेते हैं।

स्वयं अपनी प्रशंसा करना या दूसरों के मुख से प्रशंसा सुनने की इच्छा रखना, दोनों ही अपने अस्तित्व को ईश्वर की महिमा से अलग करना है क्योंकि हमारे द्वारा किया गया अच्छा काम, स्वयं ही हमारी अच्छाइयों को रेखांकित करता है। जब व्यक्ति स्वयं ही अपने मुख से अपनी प्रशंसा करता है तो इसमें अहंकार झलकने लगता है। इसलिए कहावत है कि समग्र शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करना सरल है, लेकिन स्व-प्रशंसा के भाव को अपने हृदय से निकालना अत्यंत कठिन है।

प्रशंसा सुनने की पात्रता होना ज़रूरी है

प्रशंसा व्यक्ति को तत्काल ही प्रभावित करती है क्योंकि इससे उसके अहम की तुष्टि होती है। अहम अहंकार का विकराल रूप धारण कर अन्य मानसिक विकारों को भी आमंत्रित कर लेता है। कहा जाता है कि यदि आप एक विकार को आमंत्रित करते हैं वह अपने कुनबे के साथ हाजिर हो जाता है। इसलिए व्यक्ति में प्रशंसा सुनने की पात्रता होना जरूरी है। इस पात्रता से ही उसकी क्षमता का आंकलन किया जा सकता है कि वह प्रशंसा को पचा पा रहा भी है या नहीं।

प्रशंसा की भूख तृप्त नहीं होती

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय नष्ट न करके, गुणों को अपनाने का प्रयत्न करें। प्रशंसा से बचें, यह आपके व्यक्तित्व की अच्छाइयों को घुन की तरह चाट जाती है। प्रशंसा की भूख जिसे लग जाती है, वह कभी तृप्त नहीं होती है। प्रशंसा एक ऐसा जाल है, जिसमें तेज रफ्तार से परिंदा खुद आकर फँस जाता है। प्रशंसा केवल भड़कीले वस्त्रों में लिपटा हुआ असत्य है।

मिथ्या प्रशंसा से पतन होता है

मिथ्या प्रशंसा और चापलूसी मनुष्य को गलत मार्ग पर ले जाती है और परिणाम स्वरूप कहने वाले और सुनने वाले का पतन ही होता है। इसलिए प्रशंसा में सदा ईमानदारी, निष्पक्षता और सच्चाई होना जरूरी है। इसी प्रकार यदि शत्रु की प्रशंसा की जाए तो शत्रुता घट जाती है। अपने से छोटे, सेवक, भृत्य आदि की प्रशंसा करने से भी कभी नहीं चूकना चाहिए क्योंकि इन श्रेणी के लोगों से प्रशंसा प्राप्त करने के अवसर बहुत ही कम मिलते हैं।

प्रशंसा से विचलित होना चाहिए या नहीं?

एक बार समुद्र पर एक बच्चा खेल रहा था। अचानक समुद्र से एक लहर आई और बच्चे का चप्पल समुद्र में चला गया। इस पर बच्चा गुस्सा हो गया और समुद्र की रेत पर लिख दिया-"समुद्र चोर है"। वहाँ से थोड़ी दूर एक मछुआरा समुद्र में से काफी मछलियां पकड़कर लाया था। उसने समुद्र की रेत पर लिख दिया- "समुद्र तो हमारा पालनहार है"। एक दुखियारी माँ का बेटा समुद्र में डूब कर मर गया। उसने रेत पर लिख दिया- "समुद्र मेरे बेटे का हत्यारा है"। एक युवक को समुद्र किनारे से सीप में से कीमती मोती मिला। उसने समुद्र की रेत पर लिख दिया-"समुद्र बड़ा ही दानवीर है"। और समुद्र में फिर एक लहर आई और जो कुछ लिखा था, सब मिटाकर अपनी मौज में वापस चली गई।

अतः जैसे समुद्र के लिए उन प्रशंसा या आलोचना का कोई मूल्य नहीं है, वो तो बस अपने कार्य में लगा रहता है। वैसे ही इंसान को ज्यादा प्रशंसा सुनकर, अहंकार नहीं पालना चाहिए और आलोचना सुनकर दुःखी हो अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना चाहिए। अच्छे इंसान द्वारा की गई प्रशंसा को प्रेरणा बनाकर हमें अपने कार्य में और ज्यादा मेहनत करने के लिए प्रेरित होना चाहिए। प्रशंसा हमें अच्छे कार्य के लिए प्रेरित कर सकती है या अहंकार पैदा कर गिरा भी सकती है। प्रशंसा या आलोचना को धीर-गंभीर लोग तुरंत पचाने लग जाते हैं और किसी अच्छे कार्य के लिए प्रेरित भी होते हैं।

मुंबई-घाटकोपर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रहार एकेडमी के प्रशिक्षणार्थियों के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र की अतिरिक्त प्रभारी ब्र.कु. विष्णुप्रिया, ब्र.कु. हर्षा तथा अन्य

वडोदरा-अल्कापुरी(गुज.)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में रेलवे स्टेशन पर आयोजित 'नशा मुक्त भारत-व्यसन मुक्त भारत' प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्टेशन डायरेक्टर कृष्ण गोपाल सोनी, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. नरेन्द्र तथा अन्य अतिथिगण।

मुंबई-पवई(महा.)। आई.आई.टी. बॉम्बे के योगस्थ ग्रुप द्वारा आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में आमंत्रित स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जानकी एवं ब्र.कु. डॉ. चिराग को एप्रीसिएशन प्रदान किया गया।

सिकंदराबाद-वेस्ट मरेडपल्ली (तेलंगाना)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में बच्चों के लिए चार दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर के समापन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में प्रतिभागी बच्चों के साथ डॉ. ब्र.कु. रामा,लोकल हॉस्पिटल,गवर्नर जाबू, उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. रवि, ब्र.कु. सत्यनारायण, रवि मदान,मालिक इंडियाना स्कॉटेस, सुरेश बिजराजका, रमेश बिजराजका तथा अन्य।

पूर्णा पिंपरी-महा.। सेवाकेन्द्र पर बच्चों के लिए आयोजित चार दिवसीय समर कैंप में बच्चों के साथ उपस्थित हैं ब्र.कु. सुरेखा।

नरसिंहपुर-म.प्र.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर जिला चिकित्सालय में आयोजित कार्यक्रम में नशा मुक्त भारत नाटिका प्रस्तुत करते बच्चे तथा स्टाफ हैं ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. अंजना, ब्र.कु. ऋषि, डॉ. शुभ लक्ष्मी सिंघई, डॉ. ऋचा मिश्रा, डॉ. राहुल नेमा, डॉ. सुनील खातकर,ट्रॉमोडिमोलॉजिस्ट एवं डॉ. रिपु दमन सिंह।

कामठी-आदर्श नगर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित तीन दिवसीय मूल्य आधारित व्यक्तित्व विकास शिविर के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. प्रेमलता, बालसत्य स्कूल की प्राचार्या स्मृति साबळे, प्रणाली आमधरे, नमता मैम, अनीता मैम, बुम्बा अकादमी की रुचि मैम तथा अन्य।

भाटापारा-छ.ग.। तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित व्यसन मुक्त चित्र प्रदर्शनी समझाते हुए स्टेशन मास्टर अजय सिंह, वाणिज्य अधिकारी केशव बंदु, जीआरपीएफ प्रभारी राजेश मिश्रा तथा अन्य।

खरगपुर-सिविल लाइन(म.प्र.)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा रेलवे स्टेशन पर आयोजित चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से यात्रियों को जागरूक करते हुए ब्र.कु. बहन।